IJAER/Jan-Feb 2022/Volume-11/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

उत्तराखंड की राजी जनजाति का समाजवादी अध्ययन

शालिनी
शोधार्थी
ओ पी जे एस विश्वविद्यालय चूरू राजस्थान

डॉ अमित
सहायक प्राध्यापक
ओ पी जे एस विश्वविद्यालय चूरू राजस्थान

सार

यह अध्ययन उत्तराखंड राजी जनजाति का समाजवादी अध्ययन में किया गया है राजी उत्तराखंड में पांच जनजातियों में से एक है और उत्तराखंड में दो पीटीजी में से एक है। उनकी आबादी उत्तराखंड के दो जिलों पिथौरागढ़ और चंपावत में वितरित की जाती है। उनकी आबादी दोनों जिलों में अलग–अलग पहाड़ियों की चोटी पर दस गांवों में बिखरी हुई है। प्राथमिक डेटा राजी समाज की सामाजिक संरचना पर विश्लेषित है।

मुख्य शब्द : राजी जनजातियां, सामाजिक , आर्थिक.

प्रस्तावना

राजी जनजातियां जो विशेष क्षेत्र (उत्तराखंड के खड़ी पहाड़ी क्षेत्र) में स्थानीय हैं, जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही हैं। राजी जनजातियां पर्यावरण, अन्य समाज के साथ बातचीत करती हैं और प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रही हैं। प्रकृति और संस्कृति दुनिया के विपरीत विचार हैं। सांस्कृतिक विकास प्रकृति के विरुद्ध होता है लेकिन प्रकृति मानवीय हस्तक्षेप का परिणाम नहीं है। हालाँकि मानव के विकासवादी विकास के लिए, संस्कृति उस पारिस्थितिक क्षेत्र का हिस्सा और पार्सल है जिसके भीतर मानव पनपता है। इस प्रकार संस्कृति एक प्रजाति के जैविक विकास में मदद करती है। लेकिन नव–वैश्वीकरण प्राकृतिक संसाधनों की विचारहीन लूट की ओर ले जा रहा है, असमानता की अस्वीकार्य गहनता और सांस्कृतिक पहचान का मानकीकरण। आदिवासी लोग जिन्हें "आदिम" माना जाता था, वे प्रकृति के साथ अपने असाधारण रूप से मजबूत संबंधों के कारण इस संकट से बचते हैं,

जिसका वे खुद को एक अभिन्न अंग मानते हैं। लेकिन पारिस्थितिक परिवर्तन उन्हें अनुकूलन और आत्मसात करने के लिए मजबूर करते हैं सांस्कृतिक पारिस्थितिकी सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण के लिए मानव अनुकूलन का अध्ययन है। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का उद्देश्य विशेष सांस्कृतिक पैटर्न की उत्पत्ति की व्याख्या करना है जो किसी भी सांस्कृतिक–पर्यावरणीय स्थिति (स्टीवर्ड, 1955) पर लागू सामान्य सिद्धांतों को प्राप्त करने के बजाय विशेष सांस्कृतिक क्षेत्रों की विशेषता है। "पारिस्थितिक संस्कृति पारिस्थितिक आज्ञाओं की एक जीवित नैतिक और नैतिक अनिवार्यता है। पूरे समाज के लिए और विशेष रूप से व्यक्ति के लिए। यह प्रत्येक मानव के पारिस्थितिक विश्व दृ ष्टिकोण के गठन की प्रक्रिया के माध्यम से सहायता प्रदान करता है, अपने स्वयं के सुधार (व्यक्ति की

आंतरिक प्रकृति को बदलें) पारिस्थितिक रूप से जागरूक, और प्रकृति के प्रति पारिस्थितिक सामाजिक दृष्टिकोण "(रिडी एटल। 2013)।

राजी जनजाति को देश के 18 सर्वाधिक संकटग्रस्त मानव समूहों की सूची में शामिल किया गया है (रावत 2014)। अगस्त 2013 को गोबिंद चंद्र नस्कर की अध्यक्षता वाली समिति ने पहले उत्तराखंड में राजी जैसे कमजोर आदिवासी समूह (पीटीजी) की आबादी में गिरावट के बारे में अपनी आशंका व्यक्त की थी। कुंडू, एम। (1992) आदिवासियों के मानवशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय अध्ययन के उद्देश्य से भारत में आदिवासी शिक्षा के लिए एक प्रभावी शिक्षाशास्त्र को डिजाइन करने की वकालत करना आवश्यक है क्योंकि उनकी संस्कृति, लोककथाओं, परंपराओं, रीति–रिवाजों, अंधविश्वासों और दृ ष्टिकोणों का अध्ययन आवश्यक है।राजी एक कम ज्ञात आदिवासी समुदाय है जिसे पहली बार 1823 में कुमाऊं के आयुक्त सी. डब्ल्यू. ट्रेल द्वारा प्रकाश में लाया गया था। ऐसा कहा जाता है कि राजी या बनारावत प्रागैतिहासिक किरातों के वंशज हैं, जो इस क्षेत्र के तुलनात्मक रूप से पहले बसने वाले थे कि नागा या खास।

राजी उत्तराखंड में पांच जनजातियों में से एक है और उत्तराखंड में दो पीटीजी में से एक है। उनकी आबादी उत्तराखंड के दो जिलों पिथौरागढ़ और चंपावत में वितरित की जाती है। उनकी आबादी दोनों जिलों में अलग–अलग पहाड़ियों की चोटी पर दस गांवों में बिखरी हुई है। पिथौरागढ़ में 9 राजी गाँव हैं जो कुल 556 का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें से 302 पुरुष हैं जबकि 123 व्यक्ति चंपावत जिले में एक ही गाँव में रहते हैं, जिनमें से 72 पुरुष हैं। कुछ दशक पहले तक वे गुफा में रहने वाले और भोजन संग्रह करने वालों के रूप में नवपाषाण युग का जीवन जीते थे – शिकार, मछली पकड़ने और जंगल उत्पाद पर निर्वाह करते थे। उनका पारंपरिक व्यवसाय जंगलों से लकड़ियों को इकट्ठा करना और लकड़ियों को अलग–अलग आकार देना और फिर उसी गाँव के लोगों को बेचना था। स्वभाव से वे अतीत में बहुत शर्मीले और अलग–थलग थे और अपने समाज के अलावा अन्य लोगों से बात करना पसंद नहीं करते थे। वे शाम को अपना सामान लोगों के दरवाजे पर छोड़ देते थे और सुबह–सुबह वे रियासत से अपनी कमाई वसूल करते थे। लेकिन पिछले कई दशकों में स्थिति बदल गई है अब वे लकड़ियों को कोई आकार दिए बिना सीधे बाजार में एकत्रित लकड़ी बेचते हैं, मजदूरी करते हैं, कृषि का अभ्यास करते हैं या अपनी आजीविका कमाने के लिए पशुधन बढ़ाते हैं।

राजी जनजाति की उत्पति –

कुछ विद्वानों की मानें तो प्राचीन काल में गंगा–पठार में पूर्व से लेकर मध्य तक तथा नेपाल के कुछ क्षेत्र में आग्नेयवंशीय कोल – किरात दोनों जातियों का निवास था। कालांतर में कोल – किरात दोनों जातियों के वंशज राजी के नाम से जाने गएउत्तराखंड राज्य में राजी जनजाति न्यूनतम आबादी वाली जनजाति है। इस जनजाति को बनरोत, बनराउत, बनरावत, जंगल के राजा आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है।इन सब में राजी नाम अधिक प्रचलित है।

राजी जनजाति की सामाजिक व्यवस्था

राजी जनजाति की भाषा

राजी जनजाति के लोगों की भाषा में तिब्बती और संस्कृति शब्दों की अधिक पाए जाते है। मुख्यतः राजी जनजाति में मुंडा भाषा बोलते हैं। इस मुंडा भाषा में स्थानीय भाषा का प्रभाव देखने को मिलता है। राजी जनजाति में बाह्य संपर्क हेतु कुमाऊँ भाषा का प्रयोग किया जाता है ।

राजी जनजाति का पहनावा – राजी जनजाति के पुरूष धोती, अंगरखा, पगड़ी, व चोटी रखते हैं। – राजी जनजाति की महिलाएं ओढ़नी, लहंगा, चोली पहनती है।

राजी जनजाति का शारीरिक गठन –राजी जनजाति के लोगों का कद छोटा, मुख चपटा, काठी मजबूत , होंठ बाहर व घुमावदार होते हैं। – राजी जनजाति के लोगों के बाल घुमावदार होते है। राजी जनजाति के लोगों का शरीर का रंग सामान्य काला या कुछ–कुछ पीलापन होता है।

राजी जनजाति के त्योहार –राजी जनजाति के दो प्रमुख त्योहार हैं कारक(कर्क) व मकारा(मकर) संक्राति। राजी जनजाति में इन त्योहारों पर सभी परिवारों में पकवान आदि बनाये जाते है।

राजी जनजाति का नृत्य –राजी जनजाति के लोग विशेष अवसरों पर ये थडिया जैसा नृत्य करते है। राजी जनजाति के लोग यह नृत्य गोले में होकर(थडिया नृत्य जैसे) करते हैं।

भाषा–बोली

राजी समुदाय की बोली पहाड़ी और हिंदी से भिन्न है, बोली के कुछ शब्द भोटिया बोली से मिलते–जुलते प्रतीत होते हैं. इस बोली का अस्तित्व पर लुप्त हो जाने का खतरा मंडरा रहा है. नयी पीढ़ी अब आम बोलचाल में हिंदी का प्रयोग अधिक करने लगी है. प्राचीन समय में वनरौत काष्ठ कला में पारंगत थे और लकड़ी के बर्तन बनाया करते थे. अन्य गांव के लोगों से उन बर्तनों के बदले अनाज प्राप्त कर लेते थे. पर वन नीति, कानून के तहत कड़े नियम लागू होने लगे तो इसका प्रभाव सीधे वनरौतों की जीवन चर्या पर होने लगा. लकड़ी की जगह स्टील, प्लास्टिक ,कांच के बर्तनों ने ले ली है. उपयोगिता में कमी के कारण अब इन लोगों ने भी इस काम को लगभग समाप्त ही कर दिया है.

विवाह संस्कार

वनरौतों बताते हैं कि पुराने समय में यदि लड़का और लड़की एक दूसरे को पसंद करते थे तो अपने माता–पिता के पास तरुण का फल खोद कर ले जाने का रिवाज़ था. वे इसे पकाकर साथ में खाते और माता–पिता से आशीर्वाद ले कर जीवन व्यतीत करते थे, वर्तमान में समुदाय अपनी इस परंपरागत विवाह की प्रथा को छोड़ चुका है. कुछ परिवार तो आज के समाज से इतने प्रभावित हैं कि वे सामान्य प्रचलित हिन्दू रीति–रिवाज़ के अनुसार विवाह करने लगे हैं.

संस्कृति

जंगलों से जुड़ाव के कारण ये प्रकृति प्रेमी हैं और देवताओं के रूप में प्रकृति को ही पूजते हैं. वृक्ष पूजा और भूमि पूजा इनके वहाँ अत्यधिक प्रचलित है. विगत कुछ वर्षों से यह लोग हिन्दू रीति–रिवाज़ के अनुसार भी त्योहार मनाने लगे हैं.

रहन सहन

पूर्व में वनरौत गुफाओं में रहते और मालू पत्तों के बने वस्त्र पहनते थे. आधुनिक समय में वहाँ की महिलाएं धोती या साड़ी और पुरुष पजामा या पेंट पहनने लगे हैं. अगर इनके परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती तो वह उस स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान पर चले जाया करते थे. इनके कुछ परिवार आज भी साधारण ढंग की झोपड़ी या मिट्टी पत्थर के घर बनाकर रहते हैं. इनके अधिकतर परिवार इस समय इंद्रा आवास योजना के तहत बने घरों में रह रहे हैं.

राजी जनजाति की अर्थव्यवस्था –

राजी जनजाति के लोग काष्ठ कला (लकड़ियों के सामान) में निपुण होते हैं।राजी जनजाति के लोग मूक या अदृश्य विनिमय द्वारा व्यापार करते थे। राजी जनजाति के कुछ परिवार आज भी घुमक्कड़ी अवस्था में जीवन यापन कर रहे है। राजी जनजाति के अब ज्यादातर लोग झूमविधि से थोड़ी बहुत कृषि करने लगे है। राजी जनजाति के लोग कृषि के साथ–साथ अब ये आखेट, पशुपालन व वन उत्पाद संग्रहण भी करते है।सरकार द्वारा वनों की कटाई पर रोक लगने के बाद अब राजी जनजाति के लोग वनों से बाहर निकल कर मजदूरी भी करने लगे है। अभाव एवं कुपोषण के कारण राजी जनजाति की संख्या दिन – प्रतिदिन घटती जा रही है।

उद्देशय

1. राजी जनजाति में सामजिकता पर अध्ययन करना करना
2. राजी जनजाति पर अध्ययन करना

क्रियाविधि :

प्राथमिक डेटा उत्तराखंड की राजी जनजाति में सामजिकता पर अध्ययन किया गया है राजी समाज की सामाजिक संरचना बहुत ही सरल है और समाज कई जातियों में विभाजित है, बल्कि समाज के समग्र एकीकृत विकास का भी है – सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण है । तथा द्वितीय स्त्रोत पाठय पुस्तक से संग्रहित किया गया है जिसका विश्लेषण निम्न लिखित है

डेटा विश्लेषण

सामाजिक संरचना:–

राजी का सामाजिक संगठन नातेदारी और क्षेत्रीय सिद्धांतों दोनों पर आधारित है। राजी को बान रावत, बान राजी या बान मानुस भी कहा जाता है। वे गुफा में रहने वाले और खानाबदोश शिकारी थे। राजी समाज का प्रतिनिधित्व एकल परिवार या न्यूक्लियो–संयुक्त परिवार द्वारा किया जाता है। विवाह के ठीक बाद नया जोड़ा एक नया निवास बनाता है जो कि राजी जनजाति के बीच नव–स्थानीय निवास का प्रचलन है। माता–पिता आमतौर पर बड़े बेटे के साथ या अलग घर में रहते हैं।

एकाकी परिवार राजी समाज पर हावी है, जो खुद को धर्म से हिंदू कहता है। राजी समाज की सामाजिक संरचना बहुत ही सरल है और समाज कई जातियों में विभाजित है, जैसे कन्याल, राकल, पचपया, बड़वाल, दयाकोरी और गलदियार। सभी जातियाँ समान हैं और उनमें जाति स्तर पर कोई श्रेष्ठता या हीनता अर्थात सामाजिक पदानुक्रम नहीं पाया जाता है। जाति के स्तर पर वे बहिर्विवाही होते हैं और विवाह की बातचीत के दौरान जातियों को ध्यान में रखा जाता है। प्रत्येक जाति का अपना श्इष्ट देवताश होता है (इष्ट का अर्थ है वह देवता जिसे जाति की देखभाल करने वाला माना जाता है)। अलग–अलग इष्ट देवता अपनी–अपनी जातियों के साथ नीचे दी गई तालिका में दिए गए हैं: –

तालिका: 1 राजी समाज में सामाजिक संरचना

क्रमांक सं.	. जाति	इष्ट देवता	गांवों
1	कन्याली	धनेलिनग	कुटाचौरानी, मदनपुरी
2	राकाली	घुरमाला	गनागांव, किमखोला, भगतिरवा, नेपाल
3	पचपया	मलकार्जुन	अल्तारी, किमखोला, भगतिरवा
4	बड़वाल	बेताल	अल्तारी, किम्खोला
5	दयाकोरी	भगवती	जामतारी
6	गलदियारी	केदार	चिपलतारा, किम्खोला

राजी समाज पितृवंशीय है लेकिन आर्थिक नेतृत्व परिवार की महिलाओं द्वारा किया जाता है। मादाएं शाम को जंगलों से लकड़ियां इकट्ठा करती हैं और अगली सुबह बाजार में बेच देती हैं। पुरुष अपने समकक्ष की प्रतीक्षा करते हैं और जैसे ही महिलाएं घर पर पहुंचती हैं, पुरुष आय मांगते हैं और पत्नियों से शराब के लिए कुछ राशि प्राप्त करते हैं और फिर पुरुष शराब पीने के लिए बाजार में उतर आते हैं। शराब पीकर वे अपने घरों को लौट जाते हैं। अब गांवों में किसी काम करने वाली एजेंसी के प्रभाव के कारण वे नजदीकी बाजार में नौकरी पाने का प्रयास कर रहे हैं। अभिभावक अपने बच्चों को स्कूलों में भेज रहे हैं।कुछ अभिभावक अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा के लिए निजी स्कूलों में भी भेज रहे हैं। एक लड़की ने इस साल राजी समुदाय के लिए इंटरमीडिएट की परीक्षा दी है और

तीन लड़के ऐसे हैं जो पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय में पढ़ रहे हैं। ऐसे में उनकी रुचि शिक्षा के प्रति बढ़ रही है। किमखोला गांव के कुछ परिवार आवासीय जनजाति विद्यालय (आदिवासी आवासीय विद्यालय) में संविदा के आधार पर नौकरी कर रहे हैं। फिर भी वे अन्य जातियों के अन्य परिवारों की तुलना में आर्थिक रूप से बहुत गरीब हैं।

राजनीतिक संगठन:– राजी ने आस–पास के हिंदू समुदायों से कई संस्कृतियों को अपनाया है। उनका अपना पारंपरिक राजनीतिक संरचित संगठन नहीं है। वे अपनी समस्याओं और संघर्षों को हल करते हैं यदि वे समुदाय के बड़ों के निर्देश से उत्पन्न होते हैं। जैसा कि मुखबिरों ने बताया कि विवाद बहुत दुर्लभ थे और इसलिए इस तरह के राजनीतिक संगठन अतीत में निरर्थक थे। वर्तमान समय में भी राजी समुदाय में विवाद कम ही देखने को मिलता है और यदि मिल भी जाता है तो इसे बाहर के लोग जैसे ग्राम प्रधान या उनके प्रति वफादार पाए जाने वाले लोगों के साथ–साथ समुदाय के बुजुर्गों द्वारा भी सुलझाया जाता है।

आर्थिक संगठन: – वर्तमान स्थिति में समुदाय की पारंपरिक शिकार और इकट्ठा करने की प्रथा शायद ही कभी देखने योग्य होती है। राजी जनजाति की आजीविका का पैटर्न कृषि, मत्स्य पालन और उत्खनन में मजदूरी करने के लिए आता है। कुछ लोगों को लकड़ी की वस्तुओं पर काम करते हुए भी पाया जा सकता है। मुख्य रूप से राजी जंगलों से लकड़ियों के संग्रह पर निर्भर हैं।

वे एकत्रित लकड़ियों को स्थानीय बाजार में प्रतिदिन बेचते हैं। इस प्रकार वे अपने दैनिक व्यय के लिए प्रतिदिन कमाते हैं। उनकी अर्थव्यवस्था बहुत सरल है। उनके पास बहुत छोटे आकार की कृषि भूमि भी है। वे मानसून पर भूमि की सिंचाई के लिए निर्भर हैं। इसलिए वे अपनी आजीविका के लिए आवश्यक पर्याप्त फसलों का उत्पादन करने में सक्षम नहीं हैं। वे मुख्य फसल के रूप में गेहूं का उत्पादन करते हैं क्योंकि इसमें कम पानी की आवश्यकता होती है। खेती के लिए वे फवड़ा और कुदाल को औजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। बकरी और गाय उनके घरेलू जानवर हैं जिन्हें अपने उद्देश्य के लिए पाला जाता है। प्रत्येक राजी गांव को एक विशेष आर्थिक गतिविधि के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है जैसा कि नीचे तालिका में दिया गया है। जामतड़ी और अल्ताड़ी गाँवों की राजी आबादी अपने उद्देश्यों के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करती है न कि बाजार में बेचने के लिए। उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि पद्धतियां हैं जबकि किमखोला, भगतिरवा और गनगांव गांवों के परिवारों के लिए आय का प्राथमिक स्रोत लकड़ियां इकट्ठा करना और उसे बाजार में बेचना है।

तालिका: 2 दौरा किए गए गांवों में राजी के प्राथमिक व्यवसाय

क्रमांक सं	गांवों का नाम	प्राथमिक व्यवसाय
1	किमखोला (रत्युरा)	लकड़ी संग्रह और उत्खनन
2	भागतीरवा	

3	गनागांव	लकड़ी संग्रह और कृषि
4	चिपलथारा	श्रम और लकड़ी संग्रह
5	जामताड़ी	कृषि और श्रम
6	अल्तादी	

स्वास्थ्य दशा:–

स्वास्थ्य मानव विकास के लिए एक पूर्वापेक्षा है और अनिवार्य रूप से आम आदमी की भलाई से संबंधित है। यूएनडीपी मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) में तीन घटक शामिल हैं अर्थात स्वास्थ्य, शिक्षा और आय सृजन क्षमता। स्वास्थ्य न केवल चिकित्सा देखभाल का कार्य है, बल्कि समाज के समग्र एकीकृत विकास का भी है – सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक। किसी समाज की स्वास्थ्य स्थिति उसकी मूल्य प्रणाली, दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संगठन से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। प्रत्येक पारिस्थितिक स्थिति में पर्यावरण के विभिन्न घटकों के बीच जटिल अंतःक्रियाएं शामिल होती हैं। क्षेत्र में उचित स्वास्थ्य देखभाल की कमी, तर्कहीन विश्वास प्रणाली जैसे कुछ कारक इन लोगों के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याओं को बढ़ा रहे हैं, जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। स्वस्थ जीवन शैली पर स्वास्थ्य जागरूकता की कमी और राजी जनजाति में स्वस्थ पौष्टिक आहार आदि के बारे में भी उन्हें कोई जानकारी नहीं है। इसलिए वे पोषक तत्वों (विटामिन, प्रोटीन, खनिज आदि) का सेवन करने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि इस समुदाय में स्वास्थ्य की स्थिति इन लोगों की आर्थिक (वित्तीय) और सामाजिक–सांस्कृतिक स्थितियों के सीधे आनुपातिक है। इसलिए वे कुपोषण, रक्ताल्पता, मानसिक मंदता और अन्य लक्षणों से पीड़ित हैं जो रक्त रोग से संबंधित हैं। उनके स्वास्थ्य और सामाजिक विकास से संबंधित कुछ सिफारिशें करने का प्रयास किया गया है जो उनके सफल विकास में सहायक हो सकती हैं।

उपसंहार

कुल मिलाकर, राजी जनजाति स्थानीय समुदायों से बहुत अधिक प्रभावित है। चूंकि स्थानीय आबादी बहुत ही सादा जीवन जीती है, इसलिए राजी जनजाति में भी सादगी झलकती है। जहां तक तकनीकी विकास का संबंध है, राजी केवल मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। इस संबंध में, वे आधुनिक तकनीक की दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं, लेकिन वे कंप्यूटर के उपयोग जैसे उन्नत प्रौद्योगिकी के अन्य पहलुओं से बहुत दूर हैं। अब सेल फोन उनके संचार के लिए और उनके दयालु व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक बन गया है। अतीत में वे शर्मीले स्वभाव के थे लेकिन अब परिदृश्य बदल गया है और वे बाहरी लोगों के साथ घुलमिल रहे हैं और अपने और उनके विकास से संबंधित विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर विचारों का

आदान–प्रदान कर रहे हैं। अब राजियों के सामाजिक संबंधों और सामाजिक संरचना की तस्वीर अपना आकार और ढांचा बदल रही है क्योंकि अन्य पड़ोसी समुदायों की उनके पारंपरिक अनुष्ठानों, रीति–रिवाजों और समारोहों में उपस्थिति बढ़ रही है और अन्य सदस्य खुशी–खुशी भाग ले रहे हैं और सभी में उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं

संदर्भ सूचि :

[1]. पांडे, पी. (अप्रैल–जून 2008) ‘‘द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस’’। खंड 69, संख्या 2पीपी.381–391

[2]. पांडे के.एस. और जोखान शर्मा (2015) ‘‘वैश्वीकृत दुनिया में राजी जनजाति’’ एक बदलते परिप्रेक्ष्य में। उन्नत अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल वॉल्यूम 3, अंक 12, 84–89

[3]. पंत आरबी (2006) ‘‘उत्तराखंड की जनजातियों के विशेष संदर्भ’’ के साथ जनजातीय जनसांख्यिकी, पी 38–47.

[4]. बसु.एस. (2000) "भारत में जनजातीय स्वास्थ्य के जनजातीय स्वास्थ्य के आयाम" स्वास्थ्य और जनसंख्या परिप्रेक्ष्य और मुद्दे (जे), 23 (2)रू 61–70।

[5]. आलम, ए. रावत, बी. हरशवरधन एट अल (2014) "उत्तराखंड भारत की राजी जनजाति के स्वस्थ वयस्कों के बीच बुनियादी और व्युत्पन्न मानवविज्ञान सूचकांकों का अध्ययन" सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईएसएसएनओएनलाइन 2120–3133) और प्रबंधन। (कर्नाटक किडनी हेल्थ फाउंडेशन ट्रस्ट, मैसूर का एक आधिकारिक प्रकाशन, खंड (1) नंबर 1 मार्च 2014।

[6]. पांडे, के. और पांडे, एस. (2010) "उत्तराखंड की राजी जनजातियों की स्वदेशी दवाएं"इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, खंड 9 (1) पीपी 131–133।

[7]. आलम, ए., आर. बिमल और हरशवरधन (2013) एंथ्रोपोमेट्रिक लक्षण और राजी की पोषण स्थिति: ‘‘ए उत्तराखंड, भारत में जनजातीय जनसंख्या’’ जूनियर एंथ। भारतीय सर्वेक्षण, 62(2)रू (179–186), 2013।

[8]. रस्तोगी, के. (2002) लिंग्विस्टिक ऑफ टिबेटो–बर्मन एरिया, वॉल्यूम। 25.2, पृष्ठ 155–167.

[9]. कपूर, ए.के., आर. त्यागी और कपूर, एस. (2009) 'वयस्क राजी के बीच पोषण की स्थिति और कार्डियो–श्वसन समारोह पुरुष, भारतीय हिमालय की एक शिकारी और संग्रहकर्ता जनजाति, मानव विज्ञान विज्ञान, वॉल्यूम। 117 (1), पृष्ठ 1–7.

[10]. जय सिंह रावत (2014)"उत्तराखंड के जनता का इतिहास" वॉल्यूम। 117 (1), पृष्ठ 1–7.

[11]. बिष्ट, बी.एस. (2006), "उत्तरांचल की जनजातियाँरू शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण का एक अध्ययन", कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 105.

[12]. बिशत, बी.एस. (2013)। ट्राइब्स ऑफ उत्तरांचल ए स्टडी ऑफ एजुकेशन, हेल्थ एंड न्यूट्रिशन, 2006–पी42.